रिकार्ड– ले लो,ले लो दुआयें मां–बाप.....ओमशांति प्रातःक्लास 12–3–67
हर एक घर में मां–बाप तथा दो–चार बच्चे होते ही हैं फिर आशीर्वाद मांगते हैं।वो तो है हद की बात।यह गीत हद के लिए ही गाया हुआ है।बेहद का किसको भी पता नहीं है। अब तुम बच्चे जानते हो कि हम बेहद के बाप के बच्चे और बच्चियां हैं।शिवबाबा के हैं बच्चे और फिर ब्रह्मा के हैं बच्चे और बच्चियां। कितने ढेर बच्चे और बच्चियां हैं।वो तो मात–पिता होते हैं हद के। ले लो दुआयें हद के मात–पिता की। यह है बेहद का मां–बाप। वो हद के मां–बाप भी बच्चों को सम्भालते हैं। फिर टीचर पढ़ाते हैं। अब तुम बच्चे जानते हो यह है बेहद का मां–बाप। बेहद का टीचर, बेहद का सतगुरू। सुप्रीम फादर, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम गुरू अर्थात् सत बाप ,सत टीचर, सत गुरू। सत ही सत बोलने वाला है।सत ही सिखाने वाला है।बच्चों में नम्बरवार तो होते हैं ना। लौकिक घर में भी दो–चार बच्चे होते हैं तो उनकी कितनी सम्भाल करनी पड़ती है। यहां कितने ढेर बच्चे हैं। कितने सेन्टर्स से बच्चों के समाचार आते हैं। यह बच्चा ऐसा है ,यह शैतानी करता है।यह तंग करता है।यह विघ्न डालता है। फुरना तो इसमें बाप को रहेगा ना। प्रजापिता तो यह है ना। कितने ढेर बच्चों की खयालात रहती है। तब बाबा कहते हैं कि तुम बच्चे अच्छी रीति शिवबाबा की याद में रह सकते हो।इनके उपर तो कितना हंगामा है। यह प्रबंध करना ,आबू में कुछ प्रबंध हो, कोई काम करने वाला लायक बच्चा नहीं है। तो कितना इनको फुरना रहता होगा। हजारों फुरना होता है। एक फुरना तो है ही ,हजारों दूसरे भी रहते ही हैं। कितने ढेर बच्चों का सम्भालना पड़ता है। माया भी बड़ी दुश्मन है ना। अच्छी रीति कोई2 की खाल उतार लेती है। कोई को नाक से पकड़ ,कोई को चोटी से पकड़ लेती है। इतने सभी का विचार तो करना पड़ता है ना। फिर भी बेहद के बाप की याद में रहना पड़े ।हम आत्मा नंगी आई हैं फिर नंगे ही जाना है।तुम हो बेहद के बाप के बच्चे। जानते हो कि हम क्यों नहीं बेहद के बाप की श्रीमत पर चलकर बेहद का वर्सा पा लेवें।सब तो एकरस चल नहीं सकते हैं ;क्योंकि राजाई स्थापन हो रही है ना।यह तो हो गई बादशाही।पहले2 बादशाह यह बनते हैं श्रीमत पर चलकर। यह राजाई कैसे स्थापन हो रही है यह कोई और की बुद्धि में भला आवे ही कैसे। यह है बहुत उंच पढ़ाई।बादशाही मिल गई फिर पता भी नहीं पड़ता है कि यह राजाई कैसे स्थापन हुई।यह राजाई का स्थापन होना बहुत वंडरफुल हैं।अब तुम अनुभवी हो। पहले इनको पता थोड़े ही था कि हम कौन थे। फिर कैसे जन्म लेते हैं। अब समझ में आया है। तुम भी कहते हो ना बाबा आप वो ही हो।यह बहुत समझने की बातें हैं। इस समय की बाप आकर सब बातें समझाते हैं। इस समय भल कोई कितना भी लख करोड़पति हो बाप कहते हैं वो पैसे आदि सब मिट्टी में मिल जावेंगे। बाकी समय ही कितना है। दुनियां की .....तो रेडियो में अथवा अखबारों आदि में तो सुनते ही नहीं हो कि क्या2 हो रहा है।दिन प्रतिदिन बहुत झगड़ा होता जा रहा है। सूत मूंझता ही रहता है। सब आपस में लड़ते–झगड़ते ,मरते हैं।तैयारी ऐसी हो रही है जिससे समझ में आता है कि लड़ाई हुई कि हुई। दुनियां नहीं जानती है कि यह क्या हो रहा है।क्या होने का है।तुम्हारे में भी बहुत कम हैं जो पूरा समझते हैं और याद रहता है और खुशी में रहते हैं। इस दुनियां में बाकी तो हम थोड़े ही रोज हैं। अब हमको कर्मातीत अवस्था में जाना है। हर एक को अपने लिए पुरुषार्थ करना है।तुम खुद पुरुषार्थ करते हो अपने लिए। जितना जो करेंगे उतना ही फल पावेंगे। खुद पुरुषार्थ करना है और औरों को पुरुषार्थ करवाना है।रास्ता बताना है। यह पुरानी दुनियां खलास होती है। अब बाबा आया हुआ है नई दुनियां स्थापन करने। तो इस विनाश के पहले ही उस नई दुनियां के लिए यह बाप से पढ़ाई पढ़ लो। भगवानोवाच मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। बैरिस्टर कहेगा मैं तुमको बैरिस्टर बनाउंगा। यह तो है भगवानोवाच कि मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। लाडले बच्चों तुमने भक्ति बहुत की है। आधा कल्प तुमने रावण द्वारा दुःख उठाया है।...है ही दुःखधाम

रावणराज्य। आधाकल्प रावणराज्य ,आधा कल्प राम राज्य है ना। यह भी किसी को पता नहीं है कि राम किसको कहा जाता है। राम राज्य कब ,कैसे स्थापना हुआ?यह सब बातें तुम ब्राह्मण ही जानते हो।तुम्हारे में भी कोई तो ऐसे हैं जो बिल्कुल ही नहीं जानते हैं। बाप के पास कोई तो सयाने बच्चे होते हैं।कोई बच्चे फिर नालायक भी होते हैं ना।इनके पास भी ढेर बच्चे हैं। कितने नाम बदनाम करते हैं।सर्विस के बदले डिससर्विस करते रहते हैं। ऐसी डिससर्विस करते हैं जो बाप से उनका बुद्धियोग छुड़ाय देते हैं।शास्त्रों में तो कहानियां बना दी हैं। बाप बैठ यथार्थ रीति अर्थ समझाते हैं। वास्तव में बातें सारी यहां की ही हैं।यह भी ड्रामा में ही नूंध है।ड्रामा अनुसार यह भी होने का ही है। जो पूरा पढ़ते नहीं हैं तो वो क्या करेंगे?औरों को भी खराब कर देंगे।इसलिये ही बच्चों को समझाया जाता है कि बाप को फालो करो। जो अच्छे सर्विसेबुल बच्चे हैं बाबा के दिल पर चढ़े हुये हैं, पूछ भी सकते हो कि किसका संग करें?बाबा झट बता सकते हैं कि इसका संग बड़ा अच्छा है। बहुत हैं जो संग ही ऐसे का करते हैं जिनका रंग ही उल्टा चढ़ जाता है।गाया भी जाता है संग तारे कुसंग बोड़े। कुसंग लगेगा तो एकदम खतम कर देगा। घर में भी दास–दासियां तो चाहिए ना। प्रजा के भी नौकर–चाकर सब चाहिए ना। यह सारी राजधानी स्थापन हो रही है।इसमें बहुत विशाल बुद्धि चाहिए। इसलिए ही बेहद का बाप मिला है तो श्रीमत लेकर उस पर चलो। नही तो मुफ्त में ही पद भ्रष्ट हो जावेगा। इसमें अब फेल हुये तो जन्म जन्मांतर कल्पकल्पांतर ही फेल होते रहेंगे।समझा जाता है कि यह पूरा पढ़ते नहीं हैं तो क्या पद पावेंगे। खुद भी समझते हैं कि हम सर्विस को तो करते ही नहीं हैं। हमसे तो होशियार और बहुत हैं। होशियार को ही सर्विस के लिए बुलाती हूँ।तो जो होशियार हैं वो ही जरूर उंच पद भी पावेंगी ना। हम उतनी सर्विस नहीं करते हैं तो उंच पद पा नहीं सकेंगे। टीचर को स्टुडेंट को समझा सकते हैं ना। रोज पढ़ते हैं।रजिस्टर उनके पास रहता है। पढ़ाई का और चाल का भी रजिस्टर रहता है। यहां भी ऐसे ही है।इसमें फिर मुख्य है योग की बात। योग अच्छा होता है तो चलन भी अच्छी ही रहेगी। पढ़ाई में फिर अहंकार आ जाता है। इसमें सारी गुप्त मेहनत ही याद की। इसलिए ही योग में नहीं रहते हैं।बाबा ने समझाया है कि योग अक्षर निकाल दो। बाप जिनसे वर्सा मिलता है उनको तुम याद नहीं कर सकते हो। आधा कल्प से तुम याद करते आये हो।अब कहते हो बाबा हम भूल जाते हैं। योग अक्षर ही मुख से निकाल देना चाहिए। योग शास्त्रों का अक्षर है।बाप तुम बच्चों को कहते हैं कि मुझे याद करो।यह है ही याद की यात्रा।योग की यात्रा कब होती है क्यो?योग अक्षर ही है हठ योगियों का।इस पढ़ाई में योग अक्षर है ही नहीं।यह है याद। तुम बाप को याद नहीं करते हो।वंडर है।पति जो गटर में गिराते हैं उनको याद करते हो। जो तुमको गटर से निकालते हैं उनको याद नहीं कर सकते हो।बाप कहते हैं हे आत्माओं तुम मुझ बाप को याद नहीं कर सकते हो?मैं तुमको रास्ता बताने आया हूँ। तुम मुझे याद करो तो इस योगाग्नि से पाप भस्म हो जावेंगे।भक्ति मार्ग में मनुष्य कितने धक्के खाने जाते हैं।कुम्भ के मेले में जाकर कितनी ठंड में जाकर स्नान करते हैं।कितनी तकलीफ सहन करते हैं।यहां तो कोई तकलीफ की बात ही नहीं है। सिर्फ अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। घूमने जाते हो तो एकांत में बैठ कर बाप को याद करो।झरमुई–झगमुई वाले वातावरण में रहने से वो वातावरण खराब हो जाता है। जितना समय मिले बाप को याद करने की प्रैक्टिस करो।फर्स्ट क्लास सच्चे माशूक के आशिक बनो। बाप तो कहते हैं कि देहधारी का फोटो भी नहीं रखो। सिर्फ एक ही शिवबाबा का रखो। जिसको ही याद करना है। अगर समझो कि सृष्टि चक्र को ही याद करते रहे तो भी त्रिमूर्ति और गोले का चित्र बहुत फर्स्ट क्लास है। इसमें सारा ज्ञान है।स्वदर्शन चक्रधारी तुम्हारा नाम अर्थ सहित रखा हुआ है।नया कोई यह नाम सुने तो समझ ही नहीं सकें।

यह तुम बच्चे ही समझते हो।तुम्हारे में भी कोई ही अच्छी रीति याद करते हैं। बहुत हैं जो याद करते ही नहीं हैं।अपना खान ही खराब कर लेते हैं। पढ़ाई तो बहुत सहज है। बाप कहते हैं साइलेंस से तुमको साइंस पर विजय पानी है। साइलेंस और साइंस रास एक ही है। फारेन में भी 3मिनट साइलेंस कराते हैं। मनुष्य भी चाहते हैं कि हमको शांति मिले। अब तुम जानते हो कि शांति का स्थान तो है ही ब्रह्मांड।जिस ब्रह्म तत्व में हम आत्मा इतनी छोटी बिंदी रहती हैं। वो सब आत्माओं का झाड़ तो वंडर। मनुष्य कहते भी है। कि भृकुटि के बीच चमकता है अजब सितारा। बहुत छोटा सोने का तिलक यहां बनाकर लगाते हैं। आत्मा भी बिंदी है। बाप भी उनके बाजू में आकर बैठेंगे। साधु–संत आदि कोई भी अपनी आत्मा को नहीं जानते हैं।जबकि आत्मा को नहीं जानते हैं तो परमात्मा को कैसे जान सकते हैं?सिर्फ तुम ब्राह्मण ही आत्मा और परमात्मा को जानते हो। कोई भी धर्म वाले जान नहीं सकते हैं। दुनियां भर में तुम्हारे सिवाय और कोई जान ही नहीं सकते हैं।अभी तुम ही जानते हो कि कैसे इतनी छोटी सी आत्मा इतना पार्ट बजाती है। सत्संग तो बहुत करते हैं। समझते कुछ भी नहीं हैं।इसने भी बहुत गुरू किये हैं। अब बाप कहते हैं कि इन सब गुरूओं.....को मारो। यह सब हैं भक्तिमार्ग के गुरू। ज्ञानमार्ग का गुरू एक ही है। बाकी है भक्तिमार्ग के।डबल सिरताजधारी राजाओं के आगे सिंगल ताजधारी माथा झुकाते हैं। नमन करते हैं ;क्योंकि वो पवित्र हैं।इन पवित्र राजाओं का ही मंदिर बना हुआ है। पतित जाकर उनके आगे माथा टेकते हैं ;परंतु उनको कोइ यह पता थोड़े ही है कि कौन है ,हम क्यों माथा झुकाते हैं। सोमनाथ का भी मंदिर बनाया। अब पूजा तो करनी ही है ;परंतु बिंदी की पूजा कैसे करें?बिंदी का .....कैसे बनावें?यह है बहुत गुह्य बातें।गीता आदि में थोड़े ही यह बातें हैं। गीता भी है झूठी। इसलिए ही बाबा ने कहा था कि लिख दो कि झूठी गीता को पढ़ने से भारत नर्कवासी बने हैं। सच्ची गीता से भारतवासी स्वर्गवासी बनते हैं। जो खुद के मालिक हैं वो ही बैठ समझाते हैं। कृष्ण क्या जाने इन बातों को। अभी तुम जानते हो कि कैसे हम इतनी छोटी सी आत्मा में यह पार्ट नूंधा हुआ है। आत्मा ही अविनाशी है। पार्ट भी अविनाशी है। वंडर है ना। यहा सारा बना बनाया खेल है। कहते भी हैं ना बनी बनाई.....चिंता ताकी कीजिये जो अनहोनी हो जावे। ड्रामा में जो नूंध है वो तो जरूर होगी। फिर चिंता की बात ही नहीं। फलाना मर गया, आत्मा ने जाकर दूसरा शरीर लिया फिर इसमें रोने की ही क्या दरकार है।वापस तो आ ही नहीं सकते।आंसू आया नापास हो गये। इसलिए बाप कहते हैं प्रतिज्ञा करो कि कभी भी रोवेंगे नहीं।परवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले बाप की वो मिल गया तो बाकी फिर क्या चाहिए?बाप कहते है। तुम अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। मैं एक ही बार आता हूँ यह राजधानी स्थापन करने के लिए।इसमें लड़ाई आदि की कोई बात ही नहीं है।गीता में दिखाया है कि लड़ाई लगी फिर पांडव बचे और साथ में कुत्ता लेकर पहाड़ों पर मर गये। जीत पहनी और मर गये।बात ही नहीं ठहरती।यह हैं सब दंत कथायें। इसको कहा जाता है भक्तिमार्ग। बाप कहते हैं तुम बच्चों को इससे वैराग होना चाहिए। पुरानी चीजों से नफरत होती है ना।नफरत बड़ा अक्षर है।वैराग अक्षर मीठा है। जब ज्ञान मिलता है तब फिर बुद्धि का वैराग हो जाता है।सतयुग–त्रेता में तो फिर ज्ञान की प्रारब्ध 21जन्म तक मिल जाती है। वहां तो ज्ञान की दरकार हीं नहीं रहती।फिर जब तुम वाममार्ग में जाते हो तो सीढ़ी उतरते हो। अब है अंत। बाप कहते हैं अब इस पुरानी दुनियां से तुम बच्चों को वैराग आना चाहिए।तुम अभी शूद्र से ब्राह्मण बन रहे हो।फिर सो देवता बनेंगे। और मनुष्य इन बातों से ही क्या जानें?भल विराट स्वरूप का चित्र बनाते हैं ;परंतु उसमें ना तो चोटी है ना शिव है। कह देते हैं देवता, क्षत्रिय ,वैश्व शूद्र।बस। शूद्र से फिर देवता कैसे, कौन बनाते हैं यह कुछ पता नहीं है। भक्तिमार्ग है ही माथा घिसाने का मार्ग। जहां–तहां पैसे रखो। माथा टेको। बाप अब (छुड़ाते) हैं। ओम।